aircraft, none of them wanted to get down. The Captain cannot take off with the passengers standing. Ultimately, after two to three hours' delay, some of the passengers, on their own, voluntarily, decided to come down. They reached home after midnight.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA (West Bengal): They have become too much accommodating.

SHRI VIREN J. SHAH: That is why we see Mr. Gurudas Das Gupta and Mr. Mathur disagreeing and yet agreeing on one particular issue. That is accommodation part of it. Madam, I want to draw the attention of the House that this kind of thing happened when the Civil Aviation debate was going on in the House and the great Mrs. Margaret Alva and Mrs. Renuka Chowdhury were very vocal about the Indian Airlines. That very evening, the Indian Airlines functioned in this manner. The reason given was that the computers had failed because of the Telecommunication Engineers' strike. Even if the computers had failed, it is most surprising how 75 or 77 duplicate Boarding Cards were issued. I can understand one or two. There was such a commotion created. The foreigners had to catch a connecting flight from Bombay to their own countries which they could not do. I thought I should bring this to the notice of the House.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Shri Mohammad Amin Ansari. Not here. Shri Hanspal.

Forced entry by some people in the Golden Temple

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपाल (पंजाब): मैडम, मैं आपके माध्यम से पंजाब में अमृतसर गोल्डन टेम्पल में हुई एक घटना की तरफ, थोड़े से बैकग्राउंड बताने के बाद, ध्यान दिलाना चाहूंगा।

1981-82 और 1983-84 में कुछ ऐसे हालात बने कि बहुत से हथियारबंद लोग गोल्डन टेम्पल के अंदर पहुंच गये और गोल्डन टेम्पल को एक फोर्ट की तरह बना दिया गया। मैं भी उस बात से पूरी तरह से सहमत नहीं, लेकिन हालात के मुताबिक जून, 1984 में ब्लू स्टार आपरेशन हुआ और उस आपरेशन के बाद बड़ी मुश्किल से वहां से उन लोगों को बाहर निकाला गया, जिसमें जो बहुत अच्छी बात नहीं हुई वह यह थी कि अकाल तख्त और गोल्डन टेम्पल को भी उस आपरेशन में नुकसान हुआ। सारे संसार में रहने वाले सिखों ने इसको अच्छा नहीं समझा और उनकी रिलीजियस सेंटिमैंट्स हर्ट हुई।

उसके बाद बरनाला सरकार जब बनी, तो वह भी क्राइसिस में आई, इसीलिये कि जब वह दुबारा हथियारबंद लोग गोल्डन टेम्पल के अंदर जाना चाहते थे, तो पुलिस के जरिये उनको वहां से रोका और बाहर निकाला गया। तब बादल और कैप्टन अमरिन्द्र सिंह ने अपने आपको डिसएसोसिएट किया और बरनाला सरकार क्राइसिस में आ गई और उसको जाना पड़ा। 1.00 P.M. अभी 2-3 दिन पहले श्री मान और उनके साथी आम्स लेकर जिसकी आम अखबारों में खबरें और फोटो भी छपी हैं दोबारा गोल्डन टेम्पल के अंदर एंटर कर गये हैं। मैं इस बात को इसलिये आपके माध्यम से सरकार के ध्यान में लाना चाहता हूं कि यह एक बहुत बड़ी सीरियस बात है। अगर दोबारा वहां पर हथियार चले जायेंगे गोल्डन टैम्पल के अंदर और फिर वही सिच्युएशन बन जायेगी जो 1984 में थी तो उसको काबू करना आज की सरकार के वश की बात नहीं है। जो हालात सुधरे हुये हैं वह वापस वहीं न चले जायें इसलिये मैं सरकार के ध्यान में यह बात लाना चाहता हूं। मैं इस सारी बात के लिये मान को जिम्मेवार नहीं ठहराता हूं, मैं जिम्मेवार वहां की सरकार के, लोकल एडमिनिस्ट्रेशन को या गवर्नर के बारे में यहां पर कहना शुरू करें तो फिर यह एतराज होगा कि We cannot discuss about the Governor because he is not present here. तो वह भी अच्छी बात नहीं होगी और मैं गवर्नर का कसूर भी नहीं समझता, जैसे मान का नहीं समझता वैसे ही गवर्नर का भी कसूर नहीं समझता, यह सैन्ट्रल गवर्नमेंट या यह कह लीजिये कि वी० पी० सिंह की वीक पालिसीज़ की वजह से वहां यह सब कुछ हो रहा है। वी० पी० सिंह साहब जब देश के प्रधान मंत्री बने तो वह बात भी बहुत लंबी हो जायेगी अगर कहूं कि कैसे वह अमृतसर में गये, वहां कैसे होप्स उन्होंने दिलवाई, लेकिन दो बातें मुख्य हैं। एक तो यह कि आज तक सिमरनजीत सिंह मान लोक सभा के अंदर ओथ नहीं ले सके। मैं इसके लिये जिम्मेदार मान को बिल्कुल नहीं ठहराता। उनको इतनी हाई होप्स दे दी गई थीं प्रेजेंट सरकार से इतना उसके साथ तालमेल किया गया था कि वह इस बात पर अड़

[श्री हरबेन्द्र सिंह हंसपाल]

गए कि मैं जो कहूंगा वह माना जाएगा वरना तलवार की बात के ऊपर कोई कप्रोमाइज़ या कोई न कोई रास्ता निकाला जा सकता था लेकिन सरकार की मिसहैंडलिंग की वजह से वह लोक सभा के अन्दर ओथ नहीं ले सके, सौगंध नहीं उठा सके और यहां आकर अपना प्वायंट आफ् व्यू पंजाब के बारे में, पंजाब के लोगों के बारे में पेश नहीं कर सके। दूसरी बात, सरकार ने उनको आश्वासन दिलवाया था, वी० पी० सिंह ने दिलवाया था कि पंजाब प्राब्लम को प्रायरिटी दी जाएगी और साल्व किया जाएगा और पंजाब के अन्दर इमीडिएट्ली इलेक्शंज़ करवा दिए जाएंगे, तो इलेक्शंज़ नहीं करवाए गए। इलेक्शज़ की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया गया और यहां तक कि 6 महीने की एक्सटेंशन प्रेसीडेंट रूल के लिये और मांगी गई जबकि संविधान के अन्दर वह चीज़ अवेलेबल नहीं थी, एस्पैशली हाऊसेज़ के अन्दर उसको पास करवा कर, कंस्टीट्यूशन अमेंडमेंट ला कर और 6 महीने के लिए प्रेजीडेंट रूल और आगे बढ़ाया गया जबकि सरकार एक साल के लिए चाहती थी। हमारी पार्टी ने जोर दिया कि साल भर के लिए नहीं सिर्फ 6 महीने की ज्यादा से ज्यादा आपको एक्सटेंशन दी जाएगी। मान और उनके साथी आउट आफ् फ्रस्ट्रेशन मिसहैंडलिंग बाय द सैन्ट्रल गवर्नमेंट, वीक पालिसी की वजह से उन्होंने दरबार साहब के अन्दर, गोल्डन टैम्पल के अन्दर दोबारा हथियार ले जाना ठीक समझा और लेकर गए। कुछ लोगों का यह कहना है कि सिर्फ दोनाली बंदूक लेकर अन्दर गए हैं क्योंकि अखबार में जो फोटो छपा है वह दोनाली बंदूक का छपा है। सवाल इस बात का नहीं, आज दोनाली जा रही है, कल को वहां ए०के०-47 जाएगी, फिर ए०के०-74 जाएगी या 90 जाएगी। इस बात की रोक नहीं लग सकती? सरकार वहां पर क्या कर रही थी? क्या सरकार के पास इतनी ताकत वहां नहीं थी, फोर्स नहीं थी कि अपने रूल्ज को जो सरकार ने बनाए हुए हैं उनको इम्प्लीमेंट कर सके और इस तरह से हथियार बंद लोगों को गोल्डन टैम्पल के अन्दर न जाने दे? मेरा यह कहना है कि 1984 में जो कुछ हुआ ब्लू स्टार आपरेशन करना पड़ा, मैडम गांधी, उसी की वजह से उनको अपने देश के लिए अपनी जान देनी पड़ी, शहीद होना पड़ा। सारे संसार के सिखों की रिलीजियस फीलिंग्ज़ हर्ट हुई। ऐसी स्थिति दोबारा न बन जाए इससे मैं बहुत चिंतित हूं। मेरा इस बात में कहना नहीं लेकिन वहां से गवर्नर को वापस बुला कर अगर हमारे साथी सिंहा साहब साहब वहां चले जाएं तो हमें इसमें कोई एतराज नहीं होगा. अगर यशवत सिंहा जो वहां चले जाए तो हमें खुशी होगी। इस बात की हमें खुशी होगी।...**(व्यवधान)**

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Sinha, you have been offered Governorship by Mr. Hanspal.

SHRI YASHWANT SINHA (Bihar): Madam, appointment of Governors cannot be discussed in the House.

SHRI P. SHIV SHANKER (Gujarat): Madam, only conduct cannot be discussed. After he is appointed, his conduct cannot be discussed.

SHRI T. A. MOHAMMED SAQHY (Tamil Nadu): Mr. Hanspal, are you against the Operation Blue Star"? *(Interruptions)*

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपाल: मुझे खुशी होगी यदि यशवंत सिंहा जी चले जायें। मैं यह भी उम्मीद करता हूं कि इनके जाने के बाद वहां के हालात जरूर सुधरेंगे और मैं अपनी तरफ से विश्वास दिलाता हूं कि इस में आप को पूरा सहयोग दूंगा ताकि ये घटनायें वहां पर दोबारा न हो सकें और पंजाब की प्रोब्लम साल्व हो जाये।

श्री कमल मोरारका (राजस्थान): मैडम इनके जाने के बाद वहां के हालात सुधरेंगे? या यहां के सुधरेंगे?

उपसभापति: हंसपाल जी ने यह कहा कि इनके जाने से हालात सुधरेंगे और ऐसी घटनायें नहीं होंगी तो मैं पूछूंगी कि हंसपाल जी इसकी गारंटी कैसे दे रहे हैं?

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपाल: देखिये, जो कुछ मोरारका जी ने कहा, उन को आपत्ति होगी यशवंत सिंहा जी के वहां बैठने से, मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

श्री पी० शिवशंकर: मैंने ऐसा सुना है कि यशवंत सिंहा जी के जाने के बाद यहां के हालात सुधर जायेंगे।

उपसभापति: ऐसे तो फिर बहुत-से लोगों को गवर्नर बना देना चाहिये।

श्री प्रमोद महाजन (महाराष्ट्र): मैडम, इससे तो राज्यों की संख्या कम होगी और गवर्नर्स की ज्यादा होगी।

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपाल: मैडम, मेरा यह कहना है कि, पंजाब की स्थिति बड़े नाजुक दौर से गुजर रही है। मैं वहां के प्रजेंट गवर्नर का कंडक्ट डिस्कस नहीं करना चाहता। लेकिन बिल्कुल उनके वश की बात नहीं है। इसलिये मैं समझता हूं कि कोई पॉलिटिकल आदमी जायेगा, यशवंत सिंहा जी भी पॉलिटिकल हस्ती हैं और इनके जाने से वहां के हालात सुधरेंगे। लेकिन सरका

इस बात का ध्यान रखे कि गोल्डन टेंपल या अकाल तख्त को दोबारा हानि न होने पाये।

Relief to handloom weavers in Andhra Pradesh affected by cyclone

SHRI KOTAIAH PRAGADA (Andhra Pradesh): Madam Deputy Chairman, the entire nation knows that the May 9 cyclone took away many lives. The toll is more than 1,000 so far. There has also been enormous loss of property. It may run into several thousands of crores of rupees. But for the arrangements made for shifting the people from the lowlying areas to safer places, the loss of life would have been much more. More than six million people have been rendered homeless. Several million people have been rendered jobless.

Out of the people rendered jobless on account of the killer cyclone, three lakh people are the handloom weavers who have been affected in the eight coastal districts of Nellore, Prakasam, Guntur Krishana, East Godavari, West Godavari, Visakhapatnam and Srikakulam The loss is very great. Many people do not understand how to rehabilitate the handloom weavers. Certainly, the grant of some 10-20 kg. of rice and an ex-gratia payment of Rs. 500 to rebuild their huts are not going to be of much help. It is not possible for the handloom weavers to get themselves rehabilitated Even if the huts are rebuilt, they require looms, healds and reeds and other equipment, as well as yarn, to commence production More than 50,000 families have lost their looms, their yarn and other equipment Because of the heavy downpour for three days, the yarn was drenched in water and it has become unfit for use

Of course, the Centre has given Rs 60 crores and another Rs. 4 crores from the Prime Minister's Relief Fund for relief and rehabilitation of the affected people in Andhra Pradesh. But it is not going to suffice. The entire nation will have to support The entire nation will have to extend assistance for the relief of the affected people in Andhra Pradesh. As far as handloom weavers are concerned, the cost of a loom comes to Rs. 750. The cost of equipment like healds and reeds comes to Rs 250 and the cost of yarn comes to about Rs. 500. So, the total comes to about Rs. 1500/-. Also the cost of yarn depends upon the type production of the cloth. It may be cotton yarn or silk yarn or other thing. For other things including equipment like dobby and jaquards are required for designing etc. They are to be provided to the handloom weavers. Apart from that, the warping wheels, the winding charkhas are broken. The entire thing comes under the textile policy and, therefore, the Government will have to come in a big way to help the handloom weavers and their rehabilitation. Just an ex-gratia payment of Rs. 3000/- to purchase loom, reeds and healds is not **sufficient.** *(Time bell rings).* Madam in 1977 when Krishana, Guntur and Prakasam districts were affected by tidal wave and severe cyclone, the Government of India had sanctioned a rehabilitation project, especially for rehabilitation of the handloom weavers. Even today to purchase equipment like dobbies, jaquards and other equipment, assistance will have to be provided under the DRDA or IRDP or NREP and other self-employment schemes. The handloom weavers have already obtained loans from the nationalised banks to purchase equipment.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now take your seat, the matter is over. Please take your seat.

SHRI G. SWAMY NAIK (Andhra Pradesh): Madam...

THE DEPUTY CHAIRMAN: If you want to associate yourself, it will come on record Now please take your seat. *(Interruptions).* You do not understand. It is already 1.15. I have a very heavy business before me. I have to pass this Bill.

SHRI KOTAIAH PRAGADA: Madam, let me conclude. This is a matter affecting lakhs and lakhs of handloom weavers